आले गौसुल वरा



कारी अब्दुल अज़ीज अशरफी, खण्डवा

तमाम भाईयो को सलाम किताबे स्केन करके पीडिएफ में आप तक पहुँचाने के लिए इस फक़ीर को अपनी दुआओ में खास तौर पर याद रखे।

दुआओं का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

अर्ज़े हाल

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

सरकार गौसे पाक की औलाद को आले गौसुल वरा कहते हैं।

बेहम्देही तआला

मुल्के हिन्दोस्तान के कोने–कोने में सरकार गौसे पाक की औलाद जल्वा फिगन है, मगर यहाँ सिर्फ खानदाने अशरफिया व उल्माए किछौछा में से आले गौसुल वरा की तीन मुक्तदर हस्तियों का हम जिक्र करते हैं। जिनका सिलसिलए नसब, 24 और 26 वीं पीढ़ी में सरकार गौस पाक से मिल जाता है।

1. मुजद्दिदे सिलसिलए अशरफिया, शैखुल मशायख, हज़रत अली हुसैन अशरफी जीलानी
   हुजूर अशरफी मियाँ साहब
2. मख्दूमुल मिल्लत, हज़रत मौलाना मोहम्मद अशरफी
   हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द
3. हम शबीहे ग़ौसे आज़म, हज़रत मोलाना मुफ्ती, मोहम्मद मुख्तार अशरफ
   हुजूर सरकारे कलाँ (रहीमुल्लाह अलैहीम अजमईन)

खुदाए पाक, इस हकीर की कोशिशों को कुबूल फरमाए और अपने मेहबूबे सुब्हानी की औलाद (उल्माए किछौछा) का सबको चाहने वाला बनाऐ। आमीन

अदना खादिम

जमादी उल अव्वल 1435 / मार्च 2014

हुजूर अशरफी मियाँ साहब

हुजूर अशरफी मियाँ. के मुरीदो की सही तादाद तो खुदा ही जाने क्यूके इसकी आपने कोई लिस्ट नहीं बनाई जिस से कुछ मालूम हो सके इस सिलसिले में एक दिल चश्प वाक़िया मुलाहजा फरमाए।

दिल चश्प वाकिया

एक मर्तबा हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत पीर जमाअत अली (मोहद्दिस अलीपुरी) किसी वक्त हम सफर थे एक जगमह कियाम हुवा कुछ लोग पीर जमाअत अली नक्शबन्दी से मुरीद हुवे शाह साहब ने रजिस्टर निकलवा कर उन सब के नाम दरज फरमाये तो हुजूर अशरफी मियाँ ने फरमाया भाई जमाअत अली, ये बताइये कल कियामत के दिन क्या रजिस्टर लेकर मुरीदो को तलाश करोंगे ?

पीर वो है जिसके खिर्का के दामन में जुम्ला मुरीदीन मौजूद हो फिर आपने "अबा" का दामन उठा कर दिखाया के देखो. शाह साहब ने देखा के आप के जुम्ला मुरीदीन उसमें नज़र आ रहे है सुब्हान अल्लाह।

ये देख कर हज़रत शाह साहब ने अर्ज किया के ये मुक़ाम आपको हसिल है मैं और मेरी बिसात क्या है ! एक अन्दाजे के मुताबिक आपके मुरीदो की तादाद तक़रीबन 40 लाख थी इसी तरह आप के हाथ पर इस्लाम लाने वाले

काफिर, मुशरिक, की भी कसीर तादाद है बहोत से लोग मुशर्रफ ब इस्लाम होकर दरजए कमाल को पहूँच गये. आपके खुल्फा की तादाद तकरीबन 20 हजार बताई जाती है उनमें दो हजार उल्मा व मशाइख ने आपसे खिलाफत व इजाज़त हासिल की है आप के खुल्फा किछौछा, बरैली, कानपुर, मुरादाबाद, आगरा, अजमेरशरीफ, देहली, जाइस रायबरेली, पटना, बारांबकी, फैजाबाद, बस्ती, शाहजहाँपूर, गोरखपुर, मुबारकपुर बनारस, लखनऊ, कलकत्ता, पन्डवा शरीफ, देहरादुन बिजनौर, इन्दौर बुरहानपुर, मालेगांव, भीवन्डी, बम्बई, पीली भीत, बदायु, गोंडा यु.पी., बिहार, बंगाल, आंध्राप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, सोराष्ट्र, गुजरात राजस्थान, कश्मीर, मिरठ, पंजाब, पिशावर, रावल पिन्डी, लाहौर, पाकिस्तान, बगदाद शरीफ, मक्का शरीफ, मदीना शरीफ गर्ज के मुल्क व बैरोने मुल्क हर जगाह आपके खुल्फा हज़रात थे।

नोट :- पुरी तफसील के लिये देखिये किताब (सीरते अशरफी)

अशरफी मियाँ वली की हैसियत से

हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह के हम असर उलमा व मशाइख में हजरत सय्यद शाह वारिस अली चिश्ती (देवा शरीफ)

इमाम अहमद रज़ा खाँ फाजिले बरैलवी, हज़रत मौलाना सय्यद शाह आले रसूल साहब मारहिरा शरीफ सदरूल फाजिल हज़रत मौलाना सय्यद शाह नईमुद्दीन मुरादाबादी

हज़रत मौलाना शाह फज़्लुर रहमान मोहद्दिस मुरादाबादी, हज़रत मौलाना इरशाद हुसैन साहब रामपूरी, हज़रत मौलाना सय्यद शाह अ. कदीर मक्का शरीफ, हज़रत सय्यद शाह रिज़्वान साहब मदीना शरीफ, हज़रत मौलाना बशीर साहब लखनवी, हज़रत मौलाना सय्यद शाह जमाअत अली नक्शबंदी मोहद्दीस अलीपूरी, हज़रत मौलना अ. कादीर साहब बदायुनी रहीमुल्लाह अलैहीम इनके अलावा बेशुमार उलमा व मशाइख है जिनका जिक्र बखौफे तवालत मुमकीन नहीं इन तमाम बुर्जुरगो का हुजूर अशरफी मियाँ की विलायत (वली होने) पर इत्तफाक था !

साहिबे तजरीद हज़रत हाजी वारिस अली रहमतुल्लाह अलैह ने आपको अल्लाह का वली फरमाया है जब कभी हुजूर अशरफी मियाँ देवा शरीफ तशरीफ लाते तो हज़रत हाजी साहब मीलाद शरीफ जुरूर पड़वाते और आपकी तकरीर करवाते और ये भी मशहूर है के जब हुजूर अशरफी मियाँ देवा शरीफ तशरीफ लाते तो हाजी साहब फरमाते के हमारे इमाम साहब आ गये अब हमारी नमाज जमाअत से होगी। हाजी साहब ने एक बार आपके पीछे नमाज अदा करके फरमाया के ऐसा इमाम हो तो मैं भी जमाअत से नमाज अदा किया करू, नमाज की हालत में कुचा व बाजार की सैर करने वाले इमामों की इक्तेदा हम से नहीं 'होती (सुब्हान अल्लाह)

इमाम अहमद रज़ा खाँ फाजिले बरैलवी बहोत कम

मेहफिले वाज़ में जाते थे मगर हुजूर अशरफी मियाँ की तक़रीर में जुरूर जाते और अपने मिलने वालों से फरमाते के हज़रत मौलाना सय्यद अली हुसैन अशरफी (हुजूर अशरफी मियाँ) उन लोगो में से है जिनकी तकरीर में सुनता हुँ !

मुर्शिदे कामिल हज़रत पीर अब्दुल गफूर अशरफी बुरहानपुरी आलेहिर्रहमा फरमाते है के में तकरीबन दस साल तक हुजूर अशरफी मियाँ की खिदमत में रहा हूँ.

एक मर्तबा में आपको नहला रहा था और जिस्म मुबारक को हाथ से मल कर धो रहा था के अचानक मेरी नज़र आपके सीने मुबारक पर पड़ी जिस पर साफ "ला इलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदूर रसुलुल्लाह" याने कलमा शरीफ लिखा हुआ था और पीठ पर दोनों कॉंधो के बिच पन्जे का निशान था. उसी वक्त हुजूर अशरफी मियाँ ने फरमाया "बाबू अब्दुल गफूर" फकीर की जिन्दगी में ये राज किसी को मत बताना वर्ना गुंगे हो जावोंगे.

हम शक्ले गौसे आज़म

गौस की शक्ल पाई तो ख्वाजा का रंग
अशरफी आला हज़रत पे लाखो सलाम

कश्फो मुराक़बात में सरकारे गौसे पाक का दीदार करने वाले तमाम बुर्जूगो का कहना है के हुजूर अशरफी मियाँ की सुरत मुबारक बिलकुल सरकारे गौसे पाक की हम शक्ल है ! चुनाचे हज़रत मौलाना जियाउल कादरी का

बयान है के एक मर्तबा शाहजहानी मस्जिद दरगाह अजमेर शरीफ में हजरत मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी की तक़रीर थी और नकिबुल औलिया हज़रत अल्लामा पीर सय्यद शाह मोहम्मद इब्राहिम साहब सज्जादा नशीन (सरकारे गौसे आज़म) और हुजूर अशरफी मियाँ स्टेज पर रौनक अफरोज थे मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी ने दौराने तक़रीर फरमाया के "ऐ ख्वाजा के भिकारियों ! ये तुम्हारी खुश किस्मती है के इस वक्त तुम्हारे सामने हुजुर सरकार गौसे आज़म रदीअल्लाहो अन्हो की जीती जागती मुँह बोलती तस्वीर यानी हुजूर अशरफी मियाँ मौजूद है और बगदाद शरीफ के सज्जादा नशीन भी तशरीफ फरमा है "इसी तरह हज़रत मौलाना अब्दुल हमीद सालम मियाँ बदायूँ शरीफ वाले फरमाते है के हमारे दादा हज़रत मौलाना शाह इमाम अब्दुल कादिर बदायुनी एक मर्तबा हुजूर अशरफी मियाँ को अजमेर से बदायूँ लाये और लोगों से फरमाया के जिन को सरकार गौसे पाक की शक्ल देखना हो वो इनको देखले !

हज़रत मौलाना सय्यद शाह मुफ्ती रिफाक़त हुसैन कानपूरी ने फरमाया के साहिबे मुक़ामात बुर्जूगो का कहना है के हुजूर अशरफी मियाँ उनके जद्दे आला सरकार गौसे पाक के हम शक्ल थे !!!

हज़रत मौलाना सय्यद गुलाम अली भीग नैरंग अशरफी अम्बावली फरमाते है के इस हक़ीर ने जब हुज़ूर अशरफी मियाँ की सुरते मुबारक को देखा और गौर किया तो वाक़ई.

यही नक्शा है, यही रंग है, सामाँ यही है।
जो सुरत है तेरी सुरते जानाँ यही है।।

तक्वा और परहेजगारी

अल्लाह के वली कम्मालाते नबी के मज़हर होते है उनकी जिन्दगी नबी की जिन्दगी का आईना होती है खुदा के उन्ही पाक बंदो में आला हज़रत, मेहबूबे रहमानी सय्यद शाह अबू अहमद "मोहम्मद अली हुसैन" अशरफी जीलानी किछौछवी याने हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह भी है.

आपकी पुरी जिन्दगी शरीअत के मुताबीक गुजरी किताब व सुन्नत पर सख्ती से पाबंद रहे यहाँ तक के सुन्नत की पाबंदी आपकी अदते करीमा बन गई थी बल्के मुस्तहब काम भी आपने नहीं छोड़े. ऐहतीयात इतनी के इस्तंजा के लिये अपनी जमीन की मिट्टी से ढेला बनवा कर सफर में साथ रखते वजु के वक्त कफनी पहन कर वजू करते ताके वजू के कतरे कपड़ो पर ना पड़े, बारगाहे खुदा वन्दी में अदब का ये हाल के मौसमे गरमी, सर्दी की शिद्दत के बावजूद कभी आपने ये नहीं फरमाया के बहोत सख्त गरमी है या बहोत शदीद सर्दी है, इसी तरह जिस्मानी तकलीफ

पर कभी आपने ये नहीं फरमाया के बहोत तकलीफ हो रही है बल्के यार की जानिब से आई हुई हर ज़ेहमत को नेमत समझ कर निहायत खूशी से आपने कुबूल कर लिया, जबान से कभी कोई लफ्ज ऐसा नहीं निकला जिससे किसी के दिल को तकलीफ पहूँचे या किसी सुनने वाले को मकरूह मालूम हो या शरई गिरफ्त हो।

- हदीस शरीफ में है के पड़ोसी को सताने वाला मोमिन नहीं है आप इस हदीस का इतना लेहाज फरमाते के पड़ोसी के ज़ोर व सितम को गवारा कर लेते और खुशी के साथ उसका अस्तक़बाल करते थे।
- हदीस में है के मुसलमान, मुसलमान का भाई है ना वो उस पर जुल्म करे और ना उसे जुल्म पर पेश करे इस हदीस की आप अमली तौर पर खुली हुई तफसीर थे।
- जो शख्स अपने दीनी भाई की हाजत पुरी करने में लगे रहता है अल्लाह तआला उसकी हाजत पूरी फरमा देता है. इस हदीसे पाक का नमूना आपकी जिन्दगी में बारहा देखा गया चुनाचे आपके एक पड़ोसी की एक अहम मुश्किल बच्चीयों की शादी करना था तो हुजूर अशरफी मियाँ ने हर तरह उनकी जुरूरत पुरी फरमा दी।
- जो शख्स किसी मुसलमान की कोई परेशानी दूर करदे तो अल्लाह तआला उससे क़ियामत के दिन की परेशानियों को दूर फरमा देगा. इस हदीस पर भी आप

अमल करते थे के हर मुस्लिम के लिये चाहे वो खानदानी हो या गैर खानदानी हो उसकी मुसीबत को अपनी मुसीबत समझ कर उसे दूर करने की आप पूरी कोशिश फरमाते।

- जो किसी मुसलमान की पर्दापोशी करे तो कियामत के दिन अल्लाह पाक उसकी पर्दापोशी फरमा देगा. इस हदीसे पाक पर भी अमल आपने किया है के कितनो के अैब छुपाते हुवे आपने हिदायत फरमाई है।

शराबी का वाक़िया

देहली में हुजूर अशरफी मियाँ के पास एक ऐसा आदमी आया जिसमें कही अैब थे वो शराबी भी था चोरी भी करता और लोगों को धोका भी देता था, बहरेहाल। उसने आकर अर्ज किया के हुजूरे वाला ! मेरे अैबो पर पर्दा डालते हुवे आप मुझे इस शर्त पर तौबा करा दीजिये के मैं कोई भी गुनाह नहीं छोडूंगा ? आपने फरमया फिर तेरी तौबा कैसी ? उसने अर्ज किया के मैं तो ऐसी ही तौबा करूँगा ? आपने फरमाया के ठीक है। लेकीन तुम मेरे सामने कोई गुनाह मत करना, उसने ये शर्त मान ली, आपने उसे तौबा करा दी जब उसके शराब पीने का वक्त आया तो उसने बोतल उठाई और पीना चाहा, क्या देखता है के हुजूर अशरफी मियाँ सामने खड़े है उसने तो यह वादा किया था के हज़रत के सामने नहीं पीऐगा, बहरेहाल। वो पीने से मजबूर रहा, इस लिये के जहाँ गया वही पीर

को सामने देखा दुसरे दिन आकर हज़रत से अर्ज किया के हुजूर ! आपने ऐसी तौबा कराई के छोटे बड़े हर गुनाह से अब अल्लाह पाक ने मुझे बचा दिया है, सुब्हान अल्लाह।

यकीनन आप खुदा के उन बन्दों में से है जिन पर रश्क किया जाये हदीस शरीफ में है के बेशक खुदा के कुछ बन्दे ऐसे है जो ना अंबिया है और ना शौहदा है लेकिन अंबिया व शौहदा रोज़े कियामत उनकी इज्जत व अज़मत को देख कर उन पर रश्क करेंगे, सरकार ने फरमाया है के वो ऐसे लोग है जो एक दूसरे से सिर्फ अल्लाह के लिये महब्बत करते है ना किसी रिश्ता की बिना पर और ना किसी माल के लेन देन पर. कसम खुदा की बेशक वो नूर पर है और नुरानी है, जब लोग डरेंगे तो वो नहीं डरेंगे और जब लोग ग़मगीन होंगे तो वो गमगीन नहीं होंगे इस हदीस की रोशनी में यक़ीनन खुदा के उन मक़बूल बन्दों में से एक मक़बूल बन्दे हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह है ! (जालिका फदलुल्लाहि युतीही मई यशा)

अहले खिरद को खबर क्या अजमते उनकी।।
जूनूँ वाले समझ सकते है ओज उनका, मुकाम उनका।।

आपके मामूलात

हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह नमाजे तहज्जुद के वक्त बेदार होते बाद नमाज़ वर्दो वज़ाइफ करते यहा तक के फज़र का वक्त हो जाता फिर नमाजे फज़र जमाअत से अदा करते और नमाजे इशराक तक फिर विर्दो वजाइफ

करते बाद इशराक नाश्ता करते फिर हाज़रीन व तालेबीन को तालीम व तलकीन करते दोपहर का खाना खाने के बाद कैलोला (थोड़ी देर सोते) करते जोहर के वक्त बेदार होते बाद अदाये जोहर अहले हाजत की दरख्वास्त सुनते और उनकी हाजात पुरी करते नमाजे असर के बाद अक्सर छोटे बच्चों को बुलाकर अपने पास बिठाते और उनकी दिल जोई फरमाते.

यहाँ तक के मगरिब का वक्त हो जाता बच्चों को मिठाई तक्सीम करते फिर अदाये मगरिब के बाद नमाजे अव्वाबिन पढ़ते और ईशा तक वजीफा करते बाद ईशा खाना तनावूल फरमाते सफर में जहाँ नमाज का वक्त हो जाता वही आप नमाज़ अदा कर लेते आपकी नमाज बारगाहे रब में अब्दे कामिल का नमूना थी.

देहली के एक मशहूर बुर्जुग हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज अखुन्दुजी अपने मुरीदो से तकमीले सुलुक के बाद ही इमामत कराते थे और ख्यालात की यकसोई की मज़बूती के बाद खिलाफत से नवाजते थे. हुजूर अशरफी मियाँ जब उनकी खिदमत में पहुँचे तो उन्होंने वुसुल के मुताबिक आप से भी इमामत कराई और पहली ही नमाज के बाद उनहोने आपको चन्द सिलसिलो की सनदें खिलाफत व इज़ाज़त दे दी.

विर्दो वज़ाइफ, आप सफर में हजर में हर जगह वक्त पर ही करते आदाबे शरीअत कभी आप नहीं छोड़ते हदीसे

रसूल पर अमल का ये आलम के हज़रत मुफ्ती अहमद यार खाँ साहब नईमी, अशरफी अलैहिर्रहमा अपनी किताब "शरे मिश्कात" जिल्द दोम पे. 464 पर एक हदीस की तशरीह करते हुवे लिखते है के हमारे दादा पीर हज़रत सय्यद शाह मोहम्मद अली हुसैन अशरफी जीलानी अलैहिर्रहमा (हुजूर अशरफी मियाँ) ने अपनी मौत व कफन के लिये यमनी हुल्ला (मुल्के यमन की चादर) और ताइफ शरीफ का शहद आबे ज़म ज़म और खाके शिफा मेहफुज रखी थी और फरमाया था के नज़ाअ के वक्त में ये शहद ये पानी और खाके शिफा मिलाकर मेरे मुंह में टपकाया जाये और इस (यमन की चादर) यमनी हुल्ला में मुझे कफन दिया जाये।

बेहम्देही तआला ये भी हदीसे रसूल पर अमल था !

खिदमते खल्क

सहाबाए कराम की नूरानी जमाअत के बाद दीने इस्लाम को फैलाने के लिये औलियाए कराम ने पूरी मेहनत व कोशिश से काम लेकर पुरी जमीन पर नूरे इस्लाम की रोशनी पहूँचा दी

उन्ही कुदसी सिफात बुजुर्गो में से कुतुबुल इरशाद हजरत सय्यद शाह अली हुसैन "अशरफी आला हज़रत" भी है जिनकी जिन्दगी तबलीगे दीन में ही गुजरी आप दीने हक़ की इशाअत के लिये जिद्दो जहद करते रहे आपके दिल में एक ही तड़प थी के लोग बुरे अकीदे व बुरे मज़हब से रूख मोड़ कर दीने हक़ और अहले सुन्नत के अकीदे अपना

ले मदनी महबूब की प्यारी–प्यारी सुन्नतों पर अमल करने वाले बन जाये इसी गर्ज से आपने किछौछा शरीफ में दारूल उलूम "जामेय अशरफ" कायम किया।

इसके अलावा हुजुर अशरफी मियाँ ने मुबारकपुर में दारूल उलूम "अल जामेअतुल अशरफीया" की इमारत बागे फिरदौस की बुन्याद रखी. बुन्यादी ईट रखते वक्त आपने हुजूर मोहद्दिसे आजमे हिन्द और हजुर हाफिज़े मिल्लत से फरमाया था के बाबू ! मदरसा खुब तरक्की करेगा. इसके खिलाफ फितने तो बहोत उठेंगे लेकीन सब खत्म हो जाऐंगे और अल्लाह इसकी हिफाज़त फरमाऐगा।

आज दुनिया देख रही है के मुबारकपूर का वही मदरसा अल जामेअतूल अशरफीया इन्तेहाई उरूज पर है और अरबी युनिवर्सिटी बन चुका है, अहले सुन्नत के मर्कजी इदारे मज़हरे इस्लाम और मनज़रे इस्लाम सब पीछे रह गये और दारूल उलूम अशरफीया सरे फेहरिस्त हो गया. तफसील के लिये देखिये किताब (अशरफीया का माजी व हाल)

हुजूर अशरफी मियाँ ही के हुक्म पर मुफ्तीए महाराष्ट्र अल्लामा अब्दुर्रशीद खाँ. साहब ने नागपूर में "जामेया अरबीया" कायम किया था.

गर्ज़ के जामेय अशरफ किछौछा, दारूल उलूम अशरफीया मुबारकपूर, मदरसा अशरफीया भागलपूर, जामेया नईमीया मुरादाबाद वगैरा।

ये सब इदारे हुजूर अशरफी मियाँ ही ने कायम किये थे.

दारूल उलूम अशरफीया मुबाकरपुर की सरपरस्ती

मौलाना बदरूल कादरी मिस्बाही लिखते है के शैखूल मशाइख हज़रत मौलाना सय्यद अली हुसैन अशरफी किछौछवी (हुजूर अशरफी मियाँ) वो अजीम शख्सीयत है जिन्होंने दारूल उलुम अशरफीया मुबारकपूर को तादमे उम्र अपनी रूहानी अज़मतो से फैज पहुँचाया।

आपका चेहरा मुबारक बड़ा पुर जलाल था अस्हाबे बातिन का कौल है के आप शक्ल में सय्यदना गौसे पाक रदीअल्लाहो अन्हो से मुशाबा याने हम शक्ल थे मुल्क व बैरूने मुल्क के लाखों इन्सान आपके हाथ पर मुरीद हुवे और मुबारकपूर तो गोया आपके नाम का दीवाना है इब्तेदाई दौर में तो ये हाल था के आपकी आमद की खबर सुनते ही अस्तक्बाल के लिये लोग स्टेशन (पाँच किलो मीटर दूर) पहोंच जाते हिजरी सन 1353 से आखरी उम्र तक आपने दारूल उलूम अशरफीया मुबारकपूर की सरपरस्ती फरमाई है इस इदारा की तमाम खिदमात आपकी दुआवों का नतीजा है। (अशरफीया का माज़ी व हाल दुसरा एडिशन)

आप की करामात

हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह की पूरी जिन्दगी का एक एक लमहा सुन्नते रसूल पर अमल करते हुवे गुज़रा है आपकी ज़ात से बहोत सी करामते जाहिर हुई है हम यहा

चन्द करामात तहरीर करते है मुर्शिदे कामिल हज़रत पीर अब्दुल गफूर अशरफी सरकारे बुरहानपुर रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया के मैं एक मर्तबा अपने पीर हुजुर अशरफी मियाँ अलैहिर्रहमा के साथ सूरत गुजरात के सफर में था। सुरत पहोंच कर हज़रत ने कुछ कपड़े खादिमों के लिये खरीदना चाहा और एक दुकान पर पहोच कर कपड़े की कीमत तै की, हज़रत ने कपड़ा ले लिया और पैसे अदा करने के लिये जैब में से एक चमड़े का छोटा बटवा निकाला जो बटन वाला था जिसमें मुश्किल से चाँदी के सिक्के दस रूपये आते, हज़रत उस बटवा में दो उंगलियाँ डाल कर दो–दो रूपये निकालते जाते इस तरह आपने छोटे से बटवे में से सौ रूपये (चाँदी के सिक्के) निकाले दुकानदार ये देख कर हैरान रह गया और अर्ज किया, हुजूर ! बस इतनी ही कीमत लूंगा इस से ज्यादा नहीं चाहिये हुजूर बस दुआ दे दें, जवाब में हज़रत ने फरमाया के जो कीमत तै हो चुकी है वही तुमको लेना है इस हुक्म पर उसने पैसे ले लिये. इसके बाद हज़रत वहाँ से आगे रवाना हुवे एक जगह रुक कर फरमाया के बाबू ! यहाँ पर बुये अशरफी आती है यहा फकीर का कोई मुरीद है एक घर की तरफ इशारा करके फरमाया वहाँ जाकर आवाज दो, आवाज दी गई तो वहाँ से एक बूढ़ा आदमी निकला जैसे ही हज़रत पर उसकी नज़र पड़ी तेजी से आकर कदमों को चुमा, मालूम हुवा के एक लम्बे अर्से के बाद उसे अपने पीर की

जियारत नसीब हुई है और वो बहोत दिनों से अपने पीर को याद करके जियारत के लिये बे करार था हज़रत ने उसे तसल्ली और दुआ दी और आगे बढ़ गये. थोड़ी दूर चलने के बाद तांगे का घोड़ा ठोकर खाया और गिर पड़ा लोगो ने देखकर कहा हुजूर ! घोड़ा मर गया आपने फरमाया "नहीं बाबू मरा नहीं है" फिर घोड़े से आपने कहाँ ! "भैय्या" फकीर को पहोंचा दो तब जावो घोड़ा उठा और चल दिया कयाम गाह पर हज़रत उतरे और ताँगा वाले को दो सौ रूपये दिये के बाबू ये पैसे लो और अब इस घोड़े को तांगे में जोतना बन्द कर दो इसने बहोत खिदमत की है इसका वक्त पूरा हो गया है. तुम दुसरा घोड़ा खरीद लेना ताँगा वाला खूश होते हुवे अपने घर आया घोड़ा खोल दिया थोड़ी देर बाद घोड़ा गिरा और मर गया तांगे वाले ने दुसरा घोड़ा खरीदा जो दो सौ रूपये में मिला सुब्हान अल्लाह !

तबसरा

छोटे से बटवे से सौ रूपये निकल आना एक करामत, अपने मुरीद की खुश्बू मेहसुस कर लेना दुसरी करामत, उसके घर का पता देना तीसरी करामत, शौके जियारत वाले को घर जाकर दीदार कराना चौथी करामत, मरे घोड़े को जिन्दा करके सफर करना पाँचवी करामत, ताँगे वाले की माली परेशानी जान लेना और उसकी मदद (दौ सौ रूपये से) करना छटी करामत, बाद में घोड़े का मर जाना सातवी करामत और दुसरा घोड़ा दो सौ रूपये ही मैं मिलना

आठवी करामत, सुब्हान अल्लाह। सच है के वली की बात तक़दीरे इलाही होती है.

विसाल शरीफ

हुजूर अशरफी मियाँ ने चन्द बार हज व जियारत की आखरी हज से वापसी पर आप किछौछा में बीमार हुवे इलाजो मोआलजा के बावजूद दिन बदिन बजाये शिफा के हालत कमज़ोर होती गई बिल आखिर 11 रज्जब 1355 हि. को सुबह के वक्त बहालते ज़िक्र आप अपने खालिक व मालिक से जामिले और अपने रब की रहमत व रिज़्वान में राहत पाई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेऊन !

आपका बा फैज आस्ताना किछौछा शरीफ में है हर साल 09–10–11 रज्जब को आपका उर्स होता है !!!.....

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द

सिलसिलए नसब आपका 15 वीं पिड़ी में हज़रत नूरूल अैन से मिल जाता है और 26 वीं पिड़ी में सय्यदना सरकार गौसे पाक रदीअल्लाहो अन्हो से मिलता है और 35 वीं पिड़ी में सरकार इमाम हसन अलैहिस्सलाम से मिल जाता है !

मोहद्दिस कैसे कहलाये

आप को हज़ारो हदीसे ज़बानी याद थी वो हदीस बयान करते तो ऐस लगता के उनकी एक आँख बुखारी शरीफ पर और दुसरी आँख मुस्लिम शरीफ के वरक़ो पर है

आपके इल्मे हदीस को देखकर हज़रत मौलाना मुतीउर रसूल कादरी बदायूनी ने 1911 ई. में आपको "मोहद्दिसे अज़में हिन्द" का प्यारा खिताब दिया !!

आपने देहली में हदीस का मदरसा कायम फरमाया और 12 साल तक मुसलसल वहाँ आपने हदीस शरीफ का दर्स दिया है फिर आप देहली से किछौछा आगये और अपने नाना के मदरसा "जामेय अशरफ" में शैखूल हदीस के औहदे पर फाइज होकर 1925 ई. से दर्स देने लगे अर्सए दराज़ के बाद फिर आप किछौछा से मुबारकपूर "अल जामेअतुल अशरफीया" में रोनक अफरोज हुवे किछौछा और मुबारकपूर में आपने गालेबन 11 साल तक हदीस शरीफ का सबक़ पढ़ाया और 1936 ई. में 42 साल की उम्र में आप पढ़ाने की खिदमत छोड़ कर सैर व सियाहत तक़रीर व तहरीर के जरिये खिदमते खल्क में लगे और तादेम मर्गे आप खिदमते खल्क ही करते रहे !!!

आपकी किताबें

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने मुख्तलीफ मौजू पर अरबी फारसी और उर्दु में सौ से ज्यादा किताबें लिखी आपकी सब से अहम और अजीमुश्शान तस्नीफ

मारेफुल कुरआन : है आपने कुरआन पाक का उर्दू तर्जूमा मारेफुल कुरआन के नाम से किया है जिसे देख कर सरकार आला हज़रत फाजिले बरैलवी ने फरमाया था के

"शहज़ादे उर्दू में कुरआन लिख रहे हो फाज़िले बरैलवी का ये जुम्ला आपके तर्जूमा मारेफुल कुरआन की आला खुसूसियत की गवाही दे रहा है !

गर्ज के आपकी सैकडों किताबे आपकी जिन्दगी में अरब व अज़म से शाया हुई मगर अब कोई किताब आपकी नहीं मिल पा रही है !

आपसी एख्तलाफ खत्म

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह के दिल में मुस्लमानो की तरक्की का बेहद ज़ज़बा था आपने सुन्नी एक्ता की मोहीम चलाई ताके सारे सुन्नी एक होकर दीन का काम अन्जाम दे, आप ही की कोशिश से बनारस में तारीखी यादगार "कॉन्फ्रेन्स" मुनाकीद हुई थी जिस में मुल्क भर के तमाम उलमा व मशाइख सुन्नी कॉन्फ्रेन्स के वाहिद प्लेट फार्म पर जाम हो गये थे आप ही ने बम्बई में "ऑल इन्डिया तबलीगे सीरत" दफ्तर कायम फरमाया और हुजूर मुजाहिदे मिल्लत को "तबलीगे सीरत" का सदर बनाया।

इसी तरह उर्से रिज़वी बरैली शरीफ में जब शैरे बेशए सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली खाँ साहब का हज़रत मुफ्तीए आज़म मौलाना मुस्तफा खाँ रज़ा साहब से इख्तेलाफ चल रहा था तो हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द की हुस्ने तदबीर से वो एख्तेलाफ खत्म हुवा और मौलाना हशमत अली साहब ने हज़रत मुफ्तीए आज़म और मोहद्दिसे आज़म

की दस्त बोसी की और इन दोनो बुजुर्गों ने मौलाना को गले से लगाया !

वो मंजर भी बड़ा दिलकश था जब्के मौलाना हशमत अली साहब मुफ्तीए आज़म और मोहद्दिसे आजम से माज़रत ख्वाँ दस्त बोसी कर रहे थे और ये दोनो बुर्जुग उनको सीने से लगा कर दुआएँ दे रहे थे !

1948 ई. में पाकिस्तान बन जाने के बाद हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द और सदरूल फाज़िल और ताजुल उलमा हज़रत मौलाना मो. उमर नईमी अशरफी ये तीनों हज़रात पाकिस्तान तशरीफ ले गये और वहाँ भी एक तन्जिम कायम फरमा दी और उस तन्जिम का नाम आपने "जमीतुल उलमाए पाकिस्तान" रखा जो आज भी पाकिस्तान में मौजुद है

खिदमते खल्क

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द अलेहिर्रहमा का मामूल था के रात तक़रीर, करके मामूली सी नींद सोते फिर उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते, तिलावते कुरआन करते देखने वाले सोचते के जब रात रात भर इस तरह इबादत व रियाजत फरमाते है तो दिन में आराम करेंगे मगर वाह रे आपकी रूहानीयत के इतनी शब बे दारी के बाद भी दिन भर खिदमते खल्क में लगे रहते कोई तावीज माँगता, कोई मस्ला पुछता, कोई अपने लिये दुआ कराता, कोई मुरीद होता गर्ज के फरयादियो की भीड़ होती और आप सब की

दरख्वास्त सुनते !!

तमाम साल हिन्दौस्तान पाकिस्तान, हिज़ाज़े मुकद्दस के दौरो में गुजर जाता हर जगह तबलीगे दीन के लिये आप तशरीफ ले जाते आप बुढ़ापे में इतना काम करते के दुसरा कोई नहीं कर सकता था. तीन तीन घन्टा तक़रीर फरमाते मगर थकन का नाम नहीं लेते आप रात के मुकर्रीर और दीन के पीर होते. आप अक्सर ईशा के वज़ू से नमाजे फजर अदा करते बल्के सुबह के वज़ू से दुसरे दिन की फज़्र पड़ते थे क्युं के आप की आदत थी के हमेशा नमाजे फज़्र के बाद मामुली वज़ाइफ पढ़ते फिर पेशाब पाखाना से फारिग होते और फौरन वज़ू करते और जब तक आराम ना करते बराबर वज़ू से रहते चाहे पुरा दिन व सारी रात ही क्यूँ ना गुजर जाये गर्ज के 24 घन्टा में जब आप सोते तबही वज़ू टुटता था. ग्यारह माह दौरे करते और एक माह रमज़ान में घर रहते मगर घर भी आराम नहीं करते पुरी शब इबादत करते नमाजे फजर के बाद एक देढ़ घन्टा आराम करते फिर बेदार होकर कुरआन पाक का तर्जुमा व तफसीर लिखते खाना सिर्फ सहरी ही में खाते और शाम में सिर्फ इफ्तारी ही पर रात गुजारते जब अर्ज किया जाता के हुज़ुर का पुरा साल तबलीगी दौरो में गुजरता है एक दिन भी आराम नहीं मिलता इस लिये माहे रमज़ान में आप घर आराम किया करें. जवाब देते के ये मुबारक महीना तो गुनाहों पर रोने तौबा करने और अपने रब को राजी करने

का है अगर इस माह में सौ जावू तो मेरा मुकद्दर सो जाएगा !

इसी तरह आपने कमो बेश 50 साल तक तबलीगे दीन के लिये मुल्क भर मे दौरे किये यहाँ तक के आखरी मर्ज में भी आप नमाजे वक्त पर अदा करते रहे विर्दो वजाइफ जारी रखे हुवे थे और सुबह से शाम तक मिज़ाज़ पुरसी करने वालो की भीड़ से आप बोर नहीं होते कमज़ौरी की वज़ह से नमाज में तकलीफ को देखकर अर्ज किया जाता के हुजूर को रूकू सजदा करने में बड़ी ज़ेहमत होती होगी लेहाजा आप बिस्तर ही पर लेट कर नमाज अदा कर लिया करें. आप फरमाते के इबादत का ख्याल मेरे जिस्म को ताकतवर बना देता है ! सुब्हान अल्लाह। हालते बीमारी में एक साहब तलाक का मसला पुछने आ गये जब्के हकीम साहब ने हज़रत को ज़ैहनी काम करने या जिस्म को हरकत देने से मना कर दिया था लेकीन हजारों बार रोकने के बाद भी आप येह केह कर बिस्तर से उठ बैठे के जब दीन का काम आज़ाये तो बीमारी का बहाना भी मेरे नज़दीक राहे फरार है ! फिर आपने तलाक के मसले पर तफसील से मज़्मुऩ लिखा गर्ज के आपने सारी जिंदगी खिदमते दिन में गुजारी दी. !!

अशरफी जिन्नात

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने अपने खानदानी बुर्जुगो की सुन्नत अदा करते हुवे हज़ारो गैर

मुस्लिमो को ईमान व इस्लाम की दौलत से मालामाल किया मुल्क के कोने–कोने में आपने पहोच कर सैकड़ो भटके हुवो को सिराते मुस्तकीम पर ला खड़ा किया और हज़रत मख्दुम अशरफ जहाँगीर सिमनानी के दामने करम से उनको मुन्सलीक कर दिया इस तरहं हर जगाह आपने सिलसिलए अशरफीया को फैला दिया और इन्सान तो इन्सान जिन्नातो को भी आपने अशरफी बना दिया.

चुनाँचे हाज़ी आरफीन का बयान है के एक मर्तबा हुजूर मोहद्दिसे आज़म हमारे यहा ठेहरे हुवे थे अचानक तीन बजे रात में हुजूर को बुलन्द आवाज से बात करते सुना तो कमरे में दाखिल होकर देखा के अजीबो गरीब मख्लूक बैठी है. हज़रत ने फरमाया आरफीन ये हमारे मुरीद और तुम्हारे पीर भाई जिन्नात है ! पाँच हजार जिन्नात मुझसे सिलसिलए कादरीया, चिश्तीया अशरफीया में दाखिल हो चुके है।

आप हालते ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम की ज़ियारत से कई बार मुशर्रफ हुवे मगर आखरी हज़ के मौका पर गुंबदे खजरा के अन्दर हालते बैदारी में आप पाँच मर्तबा दीदारे मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम से सरफराज हुवे।

आप की करामते

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह की बेशुमार करामतो में से सिर्फ तीन करामते मुलाहेजा फरमाए !

एक मर्तबा कलकत्ता में आपकी तक़रीर थी एक किराये

का कातिल मंसुबा के तहत आपको कत्ल करने के इरादे से आ बैठा जब आपकी तक़रीर शुरू हुई तो अचानक वो शख्स चीख मारकर मज़्मा में से उठा और आकर आपके कदमों में गिर गया और माफी मांगने लगा.

चुनाँचे पुछने पर उसने बताया के मैं मन्सूबा के मुताबिक हज़रत को कत्ल करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ा तो मैने देखा के एक बबर शैर ने मुझ पर छलांग लगाई और मुझे गिरा दिया फिर उसने अपने जिस्म पर पन्जो के निशान भी सब को दिखाये.

आपकी इस करामत को देखकर वो इस्लाम कुबूल कर लिया और फिर जख्मो की तकलीफ से वो इन्तेकाल कर गया.

दुसरी करामत : एक मर्तबा बंगला देश से आप मुनाज़रा करके लौटे तो बारीश जोरो पर थी. दरया का सफर था आप जिस कश्ती पर सवार थे वो मौजो की थपेड़ो में आ गई आपने खादीम अब्दुल हलीम से फरमाया के तुमको तैरना आता है उन्होने अर्ज किया आता तो है मगर यहा आपकी रूहानी ताक़त ही काम आ सकती है.

हाफ़िज यासीन मुजफ्फरपुरी भी शरीके सफर थे हज़रत ने उन से पुछा तो उन्होने अर्ज किया हुजुर ! मुझे तैरना नहीं आता तो आपने फरमाया के जब तो तुम गये – इतना सुनते ही हाफिज साहब पसीना पसीना हो गये आपने फरमाया के हाफिज साहब ! तुम्हारे जवाब से तो अब्दुल

हलीम का जवाब ठीक था – तुमको जब यहा मुझ पर भरोसा नहीं है (इसलिये तुम डुबने से डरे) तो फिर अखिरत में क्या मैं तुम्हारी शफाअत कराऊँगा ? हाफिज साहब ने अर्ज किया हुजूर ! गलती हो गई तो हज़रत ने फरमाया के अब वक्त निकल गया, बहरे हाल। जब आपकी कश्ती ज्यादा हीचकोले खाने लगी तो आपने दुआ फरमाई के बारिये तआला ! ये एक सय्यद की बर्दाश्त से बाहर है के कश्ती कभी नीचे जाये और कभी उपर आये अगर इस हकीर बन्दे से दीन की खिदमत लेना है तो मन्जिले मक्सुद तक पहोंचाँ दे और नहीं तो फिर डुबो दे ! आपकी दुआ कुबूल हुई कश्ती भंवर से निकली और साहिल पर पहोंची आप कश्ती से बाहर आये ग्यारह रूपये की शीरनी मंगा कर सरकार गौसे पाक की फातेहा दी और शिरनी तक़सीम की.

तीसरी करामत : हुज़ुर मोहदिसे आज़मे हिन्द ने विसाल के बाद गुस्ले मय्यत के वक्त अपने दोनो हाथ उँचे कर दिये और आपके मुकद्दस जिस्म से तमाम कपड़े आसानी के साथ उतार लिये गये याने कपड़े काटकर निकालने की नौबत नहीं आई आपकी ये अज़ीम करामत हजारो हिन्दु और मुस्लमानो ने अपनी आँखो से देखी और 1962 ई. में ये करामत आखबारो और माहनामो में भी छपी.

विसाल पूर मलाल

गुलस्ताने इल्म का ये फुल क्या मुर्झा गया।

सारे बागे सुन्नीयत पर ग़म का बादल छा गया।।

हुज़ूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम जिन्दगी जो दिनी खिदमात अन्जाम दी है "तारीख" कभी उनको भुला नहीं सकती चुनाचे आप जिन्दगी के आखरी दिनो में जुनुबे हिन्द के चन्द मुक़ामात मसलन राधनपूर, हिम्मत नगर, ईडर, डीसा अहमदाबाद, मैसूर वगैरा के दौरे पर थे के अचानक आपको जुकाम हो गया चुनाचे आप सारे प्रोग्राम मुल्तवी कर के अपने वतन किछौछा शरीफ आ गये और आने की वजह ये बयान फरमाई के

मौत आये तो दरे पाके नबी पर "सय्यद"।

वर्ना थोड़ी सी ज़मी हो शाह सिमनाँ के करीब।।

विसाल से दस रोज पहले आपने फरमा दिया था के 25 दिसंबर को हर हाल में लखनऊ से किछौछा मोटर लारी से रवाना हो जावूँगा. चुनाचे 25 दिसम्बर 1961 ई. मुताबिक 16 रज्जब 1381 हिजरी बरोज पीर साड़े बारह बजे दिन में जिक्र खुदा करते करते आप विसाल फरमा गये ! इन्नाल्लिाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन

विसाल मुबारक की खबर बिजली की तरह फैल गई

और देखते ही देखते दुर व नज़्दीक के हजारो अकीदत मन्द किछौछा टुट पड़े चेहराए मुबारक की जिसने भी ज़ियारत की पूकार उठा के इतना हसीन चेहरा इससे पहले कभी नहीं देखा, बहरे हाल। 26 दिसम्बर 1961 को आपकी पसन्दीदा जगाह (घर ही में) आपको दफन किया गया.

दास्ताने रंजो ग़म

सालारे क़ाफ्ला सफर कर गया।
काफ्ले को जे़र व ज़बर कर गया।।

हुजूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह के विसाल से सुन्नी दुनिया में अंधेरा छा गया और जमाते अहले सुन्नत अपने आपको यतीम समझने लगी मुल्क भर के सुन्नी आलिम व बुजुर्गों ने गम जाहीर किया आखबारो, माहणामो में रंजोगम के मज़ामीन शाया हुवे चुनांचे बरैली, कानपूर, मुबारकपुर, बदायुँ, कलकत्ता बनारस, लखनऊ टाँडा, बार बंकी, रायबरैली, गया, मेहराज गंज, बेहराईच, धामनगर, उड़ीसा आकोला बम्बई महाराष्ट्र सौराष्ट्र, गुजरात, जोधपुर, राजस्थान गर्ज के हिन्दौस्तान व पाकिस्तान से हर एक ने ग़म जाहीर किया है।

नोट : खुलासा तफसील के लिये देखिये किताब !

(हयाते मोहद्दिसे आज़मे हिन्द)

हुज़ूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह का उर्से पाक 15, 16 रज्जब को हर साल किछौछा शरीफ में होता है !!!

हुजुर सरकारे कलाँ

हुज़ूर सरकारे कलाँ हुज़ूर अशरफी मियाँ के हक़ीकी पोते ओर वली अहद जानशीन है !

फाजिले बरैलवी ने नाम रखा

हुज़ूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह जब पैदा हुवे तो आपके वालिद साहब कुछ दिनों के बाद बरैली शरीफ आला हजरत सरकार की खिदमत मे गये चुँके आला हजरत से आपको खिलाफत भी मिली थी और वो आपके उस्ताद थे चुनाँचे इस रिश्ते की वजह से हजरत ने फाजिले बरैलवी से फरमाया के आपके पोते की पैदाइश हुई है हदीसे पाके में "मोहम्मद" नाम की बहोत फजीलत आई है इसलिये उस बच्चे का नाम मोहम्मद रख दिया है अब आप भी कोई तारीखी नाम रख दें और दुआ फरमा दें।

आला हजरत सरकार ने फरमाया के उनके नाना जान "मुख्तारे कोनो मकाँ" भी तो है लेहाजा फकीर (अहमद

रजा) उस बच्चे का नाम "मोहम्मद मुख्तार" रखता है देखिये शायद यही नाम तारीखी हो गया हो ? जब "मोहम्मद मुख्तार" के अदद निकाले तो 1333 हिजरी आये यही पैदाईश का सन् है फिर एक सेकण्ड के बाद फरमाया के हजरत मख्दूम अशरफ जहाँगीर सिमनानी की निस्बत की वजह से फकीर (अहमद रजा) "मोहम्मद मुख्तार" में "अशरफ" का और इजाफा करता है अब इस नाम में ये खूबी पैदा हो गई के मोहम्मद मुख्तार से हिजरी 1333 निकलेगी और "मोहम्मद मुख्तर अशरफ" से ईसवी 1914 निकलेगी खुदा मुबारक करे इल्मनाफे और अमल सालेह अत्ता फरमाए और इस बच्चे को खुदा आपका सच्चा जॉनशीन बनाऐं आमीन।

("बहवाला तजल्लियाते इमाम अहमदे रजा")

आपकी तालीम

इल्मे दीन हासिल करने के लिये हर आलिम को पहले वतन से दूर किसी मदरसा की तरफ सफर करके दाखला लेना पड़ा तब जाकर आलिमेदीन का ताज उन्हें मिलता है मगर सरकारे कलाँ वो बुजूर्ग है जिनको इल्मेदीन के लिये बाहर किसी मदरसा में नहीं जाना पड़ा बल्के हजरत ही के घर में एक आलीशान दारुल उलूम "जामेय अशरफ"

किछौछा में कायम हुवा जहाँ मुल्क के काबिले फख्र मुदर्रेसीन करामं के जैरे साया हुजूर सरकारे कलाँ ने इल्मी कमाल हासिल किया।

पीर ने सब कुछ दे दिया

हुजूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह के सगे दादा जो आपके मुर्शिदे कामिल थे याने हुजूर अशरफी मियाँ रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का वक्त जब करीब आया तो उन्होने एलान फरमाया के जिसे जो माँगना हो माँग ले ये एलान सुनते ही सब खास व आम आये और मुँह माँगी मुरादे पाने लगे दूसरे दिन सुबह जब सरकारे कलाँ हाजिर हुए तो पीर साहब ने फरमाया के शहजादे ! तुम कुछ नहीं माँगे ? तो सरकारे कलाँ ने अर्ज किया के पहले आप वादा करें के जो माँगो दिया जाएगा तो हुजूर अशरफी मियाँ ने फरमाया के ठीक है माँगो मिलेगा। अर्ज किया के मैं आपको माँगता हूँ ? याने मैं शक्लो सूरत अमलो किर्दार में आपकी तरह हो जावू और आपकी रुहानियत हर वक्त मेरे साथ रहे तो हुजूर अशरफी मियाँ ने फरमाया के जो तुमने माँगा वो दिया ! सुब्हान अल्लाह ! इसीलिये तो अहले कश्फ ने कहा है के हुजूर सरकारे कलाँ भी सरकार गौसे पाक की हमशक्ल थे और आप अपने पीर अशरफी मियाँ के रंग में

रंगे हुवे थे आपके बचपने ही में अशरफी मियाँ ने फरमाया था के "ये बच्चा अपने वक्त का वली होगा"।

उसको नजर आयेगा बेशक जमाले गौसे पाक।
रूये अनवर देख ले जो हजरते मुख्तार का।।

हुजूर सरकारे कलाँ को हुजूर अशरफी मियाँ ने एक तस्बीह दी के उसे उर्स के दिनों में इस्तेमाल करते रहना और एक वजीफा भी बताया और एक ताज (टोपी) दिया ये ताज हुजूर अशरफी मियाँ को मदीना शरीफ में बारगाहे रिसालत से मिला था ये ताज आज भी किछौछा शरीफ में मौजूद है और उर्स के मौका पर इस ताज की जियारत कराई जाती है।

जब सरकारे कलाँ को हुजूर अशरफी मियाँ ने सब कुछ दे दिया तो दूसरे दिन एक आदमी आकर अर्ज करने लगा के हुजूर ! मुझे भी कुछ मिले ? आपने फरमाया के मैं कल तक दिया हूँ अब जिसे जो भी लेना है वो मेरे पोते व जानशीन "सय्यद शाह मुख्तार अशरफ" सरकारे कलाँ से माँगे उन्हें सब कुछ दे दिया हूँ।

दीनी खिदमात

हुजूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह जिन्दगी भर दीन की तबलीग करते रहे और प्यारे आका की प्यारी–प्यारी

सुन्नतों को आम करते रहे हिन्दोस्तान, पाकिस्तान, बंग्लादेश, अमेरिका, बर्तान्या, लंका और इंग्लैण्ड वगैरा में आपकी वजह से हजारो इस्लामी भाई तक्वा व तहारत की जिन्दगी गुजार रहे हैं और आपके नुरानी हाथ पर हजारों ने गुनाहों से तौबा की और आपके फैज़ान से लाखों मुरीदीन दुनिया के कोने–कोने में नमाज व सुन्नत की तबलीग कर रहे हैं!

गर्ज के आप की जात अहले सुन्नत के लिये काबिले फख्र थी मौला तआला आप की कब्र पर रहमत के फूल बरसाये (आमीन)

हैरत अंगेज करामत

हुजूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह की बेशुमार करामतों में से चन्द करामते मुलाहेजा करे !

गाड़ी लूट गई मगर डिब्बा मेहफूज रहा

1947 में हिन्दुस्तान व पाकिस्तान की तकसीम के वक्त हुजूर सरकारे कलाँ देहली से लाहौर रेल से जा रहे थे जब गाड़ी पंजाब पहोंची तो लोगों ने पूरी गाड़ी को लूट लिया और बोगियों को जला दिया मगर जिस बोगी में आप बैठे थे उसकी खिड़की दरवाजे सब बन्द किये गये और कई दिन तक वो डिब्बा अपनी जगह पर मेहफूज खड़ा रहा जब सब पैसन्जरों का खाना पानी खत्म हुवा तो हुजूर सरकारे

कलाँ ने फरमाया के "है कोई जो पानी पिलाये और मुँह माँगी मुराद पाये" ये सुनते ही एक गैर मुस्लिम नौजवान पानी के लिये नीचे उतरा और थोड़ी देर में पानी लेकर आ गया और अर्ज करने लगा हुजूर ! पानी बाद में पीना पहले मुझे मुसलमान कर लीजिये पूछा क्या बात है ? तो वो कहने लगा के जब मैं पानी लेकर डिब्बा में चड़ने लगा तो मैंने देखा के हजारों लोग इस डिब्बे को लूटने के लिये आये हैं मगर सैकड़ों बुजूर्ग नुरानी चेहरे, सफेद लिबास, साफा बाँधे अपने हाथों में तलवारे लिये चारों तरफ से इस डिब्बे की हिफाजत कर रहे हैं गोया के हम तमाम लोग सिर्फ आपकी वजह से सलामत है ये सुनते ही कई लोग कलमा पढ़कर मुसलमान हुवे और आपके मुरीद भी हो गये। सुब्हान अल्लाह।

ये शान है सरकारे कलाँ की के बुजूर्गों ने आपकी हिफाजत फरमाई फिर दूसरी गाड़ी आई उसमें इस डिब्बा को जोड़ा गया और हजरत व अहले डिब्बा सलामती से लाहौर पहोंच गये।

भुट्टो को फाँसी क्यूँ ?

जुलफिकार अली भुट्टो ने अपने दौरे हुकुमत में पाकिस्तान के बेशुमार उलमाए कराम को गिरफ्तार करके हुक्म दे

दिया के कल सुबह होने से पहले इन तमाम उल्मा को कत्ल कर दिया जाए इत्तेफाक से हुजूर सरकारे कलाँ उन दिनों इस्लामाबाद में जलवा अफरोज थे आपके एक मुरीद ने रात में ग्यारह बजे ये खबर दी चुनाचे आप उसी वक्त रवाना हुवे और 12 बजे रात में हजरत दाता गंज बख्श अलैहिर्रहमा के मजार शरीफ पर लाहौर हाजिर हुवे और वहाँ मख्सुस दुआ फरमाकर वापस इस्लामाबाद आ गये और फरमाया के कल सुबह सारे उलमाए कराम रिहा हो जाऐंगे चुनाँचे सुबह होते ही ये खबर पूरे पाकिस्तान में बिजली की तरह फैल गई के खुद भुट्टो गिरफ्तार हो गया और उलमाए कराम रिहा हो गये जब आप वहाँ से वापस हुए तो फरमाया के चुंके भुट्टो ने उलमा को कत्ल करना चाहा था लेहाजा अब उसी को फाँसी की सजा मिलेगी और फिर दुनिया ने देखा के वही हुवा जो हुजूर सरकारे कलाँ ने फरमाया था ! सुब्हान अल्लाह

दिल का राज

1992 में हुजूर सरकार कलाँ रहमतुल्लाह अलैह रुहानी दौरे पर रायपुर (छ.ग.) तशरीफ लाये एक दिन बाद नमाजे फज्र अकीदत मन्दो को नसीहत करते हुवे आपने फरमाया के "जितने लोग यहाँ हाजिर हैं मैं सबके दिल का राज जानता हूँ और इसी वक्त बयान भी कर सकता हूँ मगर राज जाहिर करने से बहोत से लोग रुसवा हो जाऐंगे" ! सुब्हान

अल्लाह ! दिलों के राज जान लेना ये आपकी करामत नहीं तो और क्या है ?

पीरो के पीर हो मीरो के मीर हो।
दिल की बात कहना क्या रोशन जमीर हो।।

ये भी करामत है

नवम्बर 1996 में खण्डवा (म.प्र.) के अशरफी नौजवान वाज कमेटी ने एक जलसा कराना चाहा सारा इन्तेजाम बहोत जल्द हो गया मगर किसी मुकर्रिर से तारीख नहीं मिल पा रही थी उन्हीं दिनों में हुजूर सरकारे कलाँ विसाल फरमा गये और आपकी करामत इस तरह जाहिर हुई के खण्डवा वालों को जलसे की तारीख आपके चेहल्लुम शरीफ के मौके पर मिली लिहाजा खण्डवा का ये जलसा भी आपके चेहल्लुम से मन्सूब हो गया और 4 जनवरी 1997 को अशरफ नगर, पड़ावा, खण्डवा में बड़ा आलीशान "जश्ने फर्जन्दे गौसे आजम" मुनाकीद हुवा जिसमें मशहूर उलमाए अहले सुन्नत ने खिताब फरमाया ये खण्डवा वालों पर हजरत का पहला रुहानी फैज था एक साल बाद फिर हजरत के फैजान से खण्डवा में उसी जगह बेमिसाल अजिमुश्शान," आले रसूल कॉन्फ्रेंस" 31 मार्च 1998 में मुनाकीद हुई जिसमें दर्जनों उलमाए अहले सुन्नत व पिराने तरीकत शरीक हुए, खुसूसी तौर पर आले मुस्तफा, औलादे

मुर्तुजा, फर्जन्दे गौसुल वरा, खलीफए सरकारे कलाँ, हजरत अल्लामा मौलाना सय्यद राशिद मक्की मियाँ साहब किब्ला किछौछा शरीफ से तशरीफ लाये और मुबल्लिगे एशिया व अफ्रीका, साहेबे सज्जाद सरकारे बुरहानपुर खलीफए सरकारे कलाँ हजरत मौलाना पीर अब्दुर्रशीद अशरफी साहब बुरहानपुर से तशरीफ लाये ! खण्डवा में आले रसूल की आमद और अवाम व उलमा की कसीर तादाद में शिरकत यकीनन हुजूर सरकारे कलाँ की करामत है।

विसाल और उर्स

हुजूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह ने अपने लिये पहले ही से कब्र खुदवा ली थी और उसमें लेटकर बैठकर अच्छी तरह देख लिया था कफन अपनी जाती रकम से पहले ही मंगा लिया था हर एक के हक वगैरा अदा किये खानदान व घर वालों से अपने लिये दुआऐं मगफिरत की दरख्वास्त करते रहे शहजादों को ताकीद की के मेरे चालीसवे तक ताजियत के लिये हर आने वाले की खातिर व मदारात करे ताके फकीर की रूह खुश रहे अपने जन्नती होने की बशारत आपने आखिर वक्त में इस तरह दी के फरमाया "अल्लाह का करम है नबी का एहसान है के आज मुझे दायमी जिन्दगी मिल गई"।

हुजूर सरकारे कलाँ रहमतुल्लाह अलैह की हर हर अदा

किताब व सुन्नत के मुताबिक थी उनकी हर सांस यादे इलाही से मख्मुर, उनका सीना नूर व मार्फत का गंजिना पेशानी मुबारक पर नूरे ईमान की झलक, वो दर्दमन्दों के मसीहा थे उलमा व मशाइख की मेहफिल की शान थे, बुजूर्गो की रोशन यादगार थे जिनके वली होने की शहादत्त कुतुबे वक्त हुजूर अशरफी मियाँ ने दी जिनको सब ने आरिफ बिल्लाह तसव्वुर किया जो रहमते इलाही की बरसात बनकर सुन्नी जमाअत पर एक जमाना तक बरसते रहे जो दुनियाए सुन्नीयत में बकीयतूस सलफ, हुज्जतुल खलफ, हजरत मौलाना मुफ्ती सय्यद शाह मोहम्मद मुख्तार अशरफ अशरफी जिलानी हुजूर सरकारे कलाँ के नाम से मशहूर है आलमे इस्लाम की ये अजीम शख्सीयत गालेबन 84 साल तक खिदमते दीन व खिदमते खल्क अन्जाम देती रही और 9 रज्जब 1417 हिजरी मुताबिक 21 नवम्बर 1996 इस्वीं बरोज जुमेरात एक बजे दिन को अपने रब से जा मिली (इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैह राजेऊन)

(तफसीली हालात इन किताबों में देखें)

(1) शेखुल इस्लाम का खिराजे अकीदत बारगाहे सरकारे कलाँ में
(2) हुजूर ताजदारे सिमनाँ और सरकारे कलाँ
(3) "सीरते अशरफी"

●●●

1000
9,000